eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 06, June 2026

महिला शिक्षा के क्षेत्र में पंडिता रमाबाई का योगदान

रिद्धिमा यादव[1], डॉ0 निशा राठौर[2]
[1]शोधार्थी, इतिहास विभागए आगरा कॉलेज, आगरा उ0प्र0
[2]प्रोफेसर– इतिहास विभाग, आगरा कॉलेज, आगरा उ0प्र0

Received: 21 June 2026 Accepted & Reviewed: 25 June 2026, Published: 30 June 2026

Abstract

उन्नीसवीं शताब्दी का भारतीय समाज अनेक सामाजिक कुरीतियों, लैंगिक असमानताओं तथा महिलाओं की शिक्षा के प्रति रूढ़िवादी दृष्टिकोण से प्रभावित था। ऐसे समय में पंडिता रमाबाई सरस्वती 1858–1922 ने महिला शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देकर भारतीय समाज में व्यापक परिवर्तन की आधारशिला रखी। प्रस्तुत शोध.पत्र का उद्देश्य महिला शिक्षा के विकास में पंडिता रमाबाई की भूमिका का ऐतिहासिक विश्लेषण करना है। रमाबाई ने यह अनुभव किया कि महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक एवं बौद्धिक उन्नति का प्रमुख साधन शिक्षा है। उन्होंने न केवल स्त्री शिक्षा के महत्व पर बल दियाए बल्कि इसके प्रसार हेतु अनेक संस्थाओं की स्थापना भी की।

पंडिता रमाबाई ने 1882 में भारतीय शिक्षा आयोग हंटर आयोग के समक्ष महिलाओं की शिक्षा की दयनीय स्थिति को रेखांकित किया तथा महिला शिक्षिकाओं और महिला चिकित्सकों की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने 1889 में बंबई में शारदा सदन की स्थापना की, जिसका उद्देश्य विशेष रूप से बाल.विधवाओं और परित्यक्त महिलाओं को शिक्षा एवं आत्मनिर्भरता प्रदान करना था। इसके अतिरिक्त, पुणे के निकट स्थापित मुक्ति मिशन् के माध्यम से उन्होंने महिलाओं के लिए शैक्षिक व्यावसायिक तथा नैतिक प्रशिक्षण की व्यवस्था की। उनके प्रयासों ने महिला शिक्षा को सामाजिक सुधार आंदोलन से जोड़ते हुए महिलाओं के सशक्तिकरण का मार्ग प्रशस्त किया।

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि पंडिता रमाबाई का योगदान केवल शैक्षणिक संस्थाओं की स्थापना तक सीमित नहीं था। बल्कि उन्होंने महिलाओं के अधिकार, आत्मसम्मान और स्वतंत्र अस्तित्व की चेतना को भी विकसित किया। इस प्रकार वे आधुनिक भारत में महिला शिक्षा आंदोलन की अग्रणी एवं प्रेरणादायी व्यक्तित्व के रूप में स्थापित होती हैं।

प्रमुख शब्द– पंडिता रमाबाई सरस्वती, महिला शिक्षा, शारदा सदन, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक सुधार आंदोलन

Introduction

उन्नीसवीं शताब्दी का भारतीय समाज सामाजिकए धार्मिक तथा सांस्कृतिक रूढ़ियों से गहराई से प्रभावित था। इस काल में महिलाओं की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। बाल.विवाह, सती.प्रथा, पर्दा.प्रथा, विधवा जीवन की कठोरता तथा शिक्षा से वंचित रहने जैसी अनेक समस्याएँ महिलाओं के समक्ष विद्यमान थीं। शिक्षा को महिलाओं के लिए अनावश्यक और कई बार हानिकारक माना जाता था। परिणामस्वरूप अधिकांश महिलाएँ निरक्षर थीं तथा सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन में उनकी भागीदारी अत्यंत सीमित थी। ब्रिटिश शासन के आगमन तथा आधुनिक शिक्षा के प्रसार के साथ भारतीय समाज में सुधारवादी चेतना का विकास

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 06, June 2026

हुआ, जिसके परिणामस्वरूप अनेक सामाजिक सुधारकों ने महिला उत्थान और शिक्षा के क्षेत्र में कार्य प्रारम्भ किया। इन्हीं सुधारकों में पंडिता रमाबाई सरस्वती का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। जिन्होंने महिला शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन और महिला सशक्तिकरण का आधार माना (फोर्ब्स 1996)।

पंडिता रमाबाई सरस्वती का जन्म 23 अप्रैल 1858 को एक विद्वान ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पिता अनंत शास्त्री डोंगरे संस्कृत के विद्वान थे और उन्होंने सामाजिक विरोध के बावजूद अपनी पुत्री को संस्कृ त शिक्षा प्रदान की। इस प्रकार रमाबाई ने बचपन से ही ज्ञान और शिक्षा के महत्व को समझा। संस्कृत भाषा एवं शास्त्रों पर उनके असाधारण अधिकार के कारण उन्हें पंडिता तथा सरस्वती की उपाधियों से सम्मानित किया गया। यद्यपि वे स्वयं उच्चवर्णीय पृष्ठभूमि से थीं, किंतु उन्होंने भारतीय समाज में महिलाओं विशेषकर विधवाओं और वंचित वर्ग की महिलाओं की दुर्दशा को निकट से देखा और उनके उत्थान के लिए आजीवन संघर्ष किया (कोसांबी, 1988)।

पंडिता रमाबाई का मानना था कि शिक्षा महिलाओं की मुक्ति और आत्मनिर्भरता का सबसे प्रभावी माध्यम है। उनके अनुसार शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का साधन नहींए बल्कि महिलाओं को सामाजिक बंधनों से मुक्त करने और उनमें आत्मविश्वास विकसित करने का उपकरण भी है। उन्होंने देखा कि भारतीय समाज में महिलाओं को शिक्षा से वंचित रखकर उन्हें आश्रित और कमजोर बनाए रखा गया है। इसलिए उन्होंने महिलाओं के लिए ऐसी शिक्षा व्यवस्था की वकालत की जो उन्हें बौद्धिक, नैतिक और व्यावसायिक रूप से सक्षम बना सके। यह दृष्टिकोण अपने समय के लिए अत्यंत प्रगतिशील था और आधुनिक महिला सशक्तिकरण की अवधारणा के अनुरूप था (चक्रवर्ती, 1998)।

1882 में पंडिता रमाबाई ने भारतीय शिक्षा आयोगए जिसे हंटर आयोग के नाम से जाना जाता है, के समक्ष महिलाओं की शिक्षा की वास्तविक स्थिति को प्रस्तुत किया। उन्होंने आयोग के समक्ष महिला शिक्षिकाओं और महिला चिकित्सकों की आवश्यकता पर बल दिया तथा यह तर्क दिया कि भारतीय महिलाओं की उन्नति के लिए उनकी शिक्षा को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। उनके सुझावों ने औपनिवेशिक सरकार और भारतीय समाज का ध्यान महिला शिक्षा की ओर आकर्षित किया। यह घटना भारतीय महिला शिक्षा के इतिहास में एक महत्वपूर्ण पड़ाव मानी जाती है (फोर्ब्स, 1996)।

महिला शिक्षा के क्षेत्र में पंडिता रमाबाई का सबसे महत्वपूर्ण योगदान 1889 में बंबई में स्थापित शारदा सदन् था। यह संस्था विशेष रूप से बाल.विधवाओं और परित्यक्त महिलाओं को शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से स्थापित की गई थी। शारदा सदन में महिलाओं को केवल औपचारिक शिक्षा ही नहीं दी जाती थीए बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण भी प्रदान किया जाता था। उस समय जब विधवाओं को समाज में उपेक्षा और अपमान का सामना करना पड़ता था, तब शारदा सदन उनके लिए आशा और सम्मान का केंद्र बन गया। इस संस्था ने यह सिद्ध किया कि शिक्षा महिलाओं को सामाजिक बंधनों से मुक्त कर सकती है तथा उन्हें सम्मानजनक जीवन जीने की क्षमता प्रदान कर सकती है (रमाबाई, 1887–2000)।

पंडिता रमाबाई ने आगे चलकर पुणे के निकट केडगांव में ष्मुक्ति मिशनष् की स्थापना की। जो महिला शिक्षा और पुनर्वास का एक व्यापक केंद्र बन गया। इस संस्था में अनाथए विधवाए परित्यक्ता तथा सामाजिक रूप से वंचित महिलाओं को आश्रय, शिक्षा और कौशल प्रशिक्षण प्रदान किया जाता था। मुक्ति मिशन का उद्देश्य केवल साक्षरता तक सीमित नहीं था, बल्कि महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाना भी था।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 06, June 2026

इस प्रकार रमाबाई ने शिक्षा को सामाजिक पुनर्निर्माण और महिला सशक्तिकरण के व्यापक कार्यक्रम से जोड़ा (कोसांबी, 2000)।

पंडिता रमाबाई का योगदान केवल संस्थाओं की स्थापना तक सीमित नहीं था। उन्होंने अपने लेखन और भाषणों के माध्यम से भी महिला शिक्षा के महत्व को व्यापक रूप से प्रचारित किया। उनकी प्रसिद्ध पुस्तक उच्चवर्णीय हिन्दू महिला (The High-Caste Hindu Woman) में उच्चवर्णीय हिन्दू महिलाओं की सामाजिक स्थितिए विशेषकर बाल.विवाह और विधवा जीवन की समस्याओं का विस्तृत वर्णन मिलता है। इस पुस्तक ने भारतीय महिलाओं की वास्तविक स्थिति को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उजागर किया और महिला शिक्षा तथा अधिकारों के प्रश्न को वैश्विक विमर्श का विषय बनाया (रमाबाईए 1887–2000)।

आधुनिक भारत में महिला शिक्षा के विकास का अध्ययन करते समय पंडिता रमाबाई की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण प्रतीत होती है। उन्होंने शिक्षा को महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक और बौद्धिक विकास का आधार माना तथा इसे व्यावहारिक रूप में लागू करने के लिए संस्थागत प्रयास किए। उनके द्वारा स्थापित संस्थाओं ने हजारों महिलाओं के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाया और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनीं। आज भी महिला शिक्षाए लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में उनके विचार प्रासंगिक बने हुए हैं।

महिला शिक्षा के क्षेत्र में पंडिता रमाबाई का योगदान भारतीय सामाजिक इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। उनके प्रयासों ने न केवल महिलाओं की शिक्षा के लिए नए अवसर उत्पन्न किएए बल्कि भारतीय समाज में महिलाओं की गरिमा, आत्मनिर्भरता और अधिकारों की चेतना को भी मजबूत किया। इस दृष्टि से पंडिता रमाबाई आधुनिक भारत में महिला शिक्षा आंदोलन की अग्रदूत तथा महिला सशक्तिकरण की सशक्त प्रतीक के रूप में स्थापित होती हैं।

साहित्य समीक्षा– पंडिता रमाबाई के जीवनए विचारों तथा महिला शिक्षा में उनके योगदान पर विभिन्न विद्वानों ने समय.समय पर अध्ययन किया है। इन अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि रमाबाई आधुनिक भारत में महिला शिक्षा और महिला सशक्तिकरण की प्रमुख प्रवर्तकों में से एक थीं।

जेराल्डीन फोर्ब्स (1996) ने अपनी पुस्तक आधुनिक भारत में महिलाएँ में उन्नीसवीं एवं बीसवीं शताब्दी में भारतीय महिलाओं की स्थिति तथा शिक्षा के विकास का विश्लेषण किया है। लेखिका ने स्पष्ट किया है कि महिला शिक्षा के विस्तार में पंडिता रमाबाई जैसे समाज सुधारकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही, जिन्होंने महिलाओं को सार्वजनिक जीवन में भागीदारी के लिए प्रेरित किया।

मीरा कोसांबी (2000) ने पंडिता रमाबाई– जीवन और महत्वपूर्ण लेखन में रमाबाई के जीवन, सामाजिक कार्यों तथा शैक्षिक दृष्टिकोण का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया है। इस अध्ययन में शारदा सदन और मुक्ति मिशन जैसी संस्थाओं को महिला शिक्षा एवं पुनर्वास के प्रभावी केंद्रों के रूप में वर्णित किया गया है।

मीरा कोसांबी द्वारा संपादित पंडिता रमाबाई के अपने शब्दों में, चयनित रचनाएँ (2000) रमाबाई के मूल लेखन को प्रस्तुत करती है। यह कृति उनके शैक्षिक दर्शनए महिला अधिकारों तथा सामाजिक सुधार संबंधी विचारों को समझने का महत्वपूर्ण स्रोत है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 06, June 2026

पंडिता रमाबाई की प्रसिद्ध पुस्तक उच्चवर्णीय हिन्दू महिला (1887) भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति, विशेषकर बाल.विवाह, विधवा जीवन तथा शिक्षा की कमी का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करती है। यह कृति महिला शिक्षा की आवश्यकता और सामाजिक सुधार की अनिवार्यता को रेखांकित करती है।

उमा चक्रवर्ती (1998) ने पंडिता रमाबाई के जीवन और उनके वैचारिक विकास का नारीवादी दृष्टिकोण से अध्ययन किया है। उनके अनुसार रमाबाई ने पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचनाओं को चुनौती देते हुए शिक्षा को महिला मुक्ति का प्रमुख साधन माना।

राधा कुमार (1997) ने द हिस्ट्री ऑफ डूइंग में भारतीय महिला आंदोलन के विकास का अध्ययन करते हुए पंडिता रमाबाई के योगदान को महिला अधिकारों की प्रारम्भिक चेतना के रूप में रेखांकित किया है। उनके अनुसार रमाबाई ने शिक्षा और सामाजिक न्याय के प्रश्नों को महिला आंदोलन के केंद्र में स्थापित किया।

मीरा कोसांबी (1998) के शोध लेख Multiple Contestations: Pandita Ramabai's Educational and Missionary Activities in Late Nineteenth-Century India and Abroad में रमाबाई की शैक्षिक गतिविधियों तथा उनके अंतरराष्ट्रीय प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उन्होंने भारतीय एवं पाश्चात्य शैक्षिक विचारों का समन्वय करते हुए महिलाओं के लिए वैकल्पिक शिक्षा मॉडल विकसित किया।

निकोल मैकनिकोल (1926) ने अपनी पुस्तक पंडिता रमाबाई में उनके जीवन, धार्मिक विचारों तथा सामाजिक सेवा कार्यों का वर्णन किया है। यह प्रारम्भिक जीवनीात्मक अध्ययन रमाबाई के व्यक्तित्व और उनके शैक्षिक मिशन को समझने में सहायक है।

उपरोक्त साहित्य के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि पंडिता रमाबाई के जीवन एवं कार्यों पर पर्याप्त शोध उपलब्ध है, किंतु महिला शिक्षा के क्षेत्र में उनके विशिष्ट योगदान का ऐतिहासिक विश्लेषण अपेक्षाकृत सीमित है। अधिकांश अध्ययनों में उनके सामाजिक और धार्मिक विचारों पर अधिक बल दिया गया है। अतः प्रस्तुत अध्ययन महिला शिक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान का ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक मूल्यांकन करने का प्रयास करता है।

शोध उद्देश्य–

1–महिला शिक्षा के क्षेत्र में पंडिता रमाबाई के योगदान एवं उनके द्वारा स्थापित शैक्षिक संस्थानों की भूमिका का ऐतिहासिक अध्ययन करना।

2– पंडिता रमाबाई के शैक्षिक विचारों एवं प्रयासों के महिला सशक्तिकरण तथा सामाजिक परिवर्तन पर पड़े प्रभाव का विश्लेषण करना।

शोध प्रविधि – प्रस्तुत अध्ययन में सैद्धान्तिक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है। इस प्रविधि के अंतर्गत विषय से संबंधित उपलब्ध द्वितीयक स्रोतों, जैसे पुस्तकों, शोध.पत्रों, पत्रिकाओं, ऐतिहासिक दस्तावेजों, जीवनी साहित्य तथा पंडिता रमाबाई की मूल रचनाओं का गहन अध्ययन एवं विश्लेषण किया गया है। अध्ययन का आधार पुस्तकालयीय शोध है, जिसमें संकलित साहित्य का वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं व्याख्यात्मक पद्धति द्वारा परीक्षण किया गया है। इस शोध का उद्देश्य महिला शिक्षा के क्षेत्र में पंडिता रमाबाई के योगदान, उनके शैक्षिक विचारों तथा सामाजिक प्रभाव का ऐतिहासिक एवं वैचारिक मूल्यांकन करना है।

विश्लेषण

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 06, June 2026

महिला शिक्षा के क्षेत्र में पंडिता रमाबाई के योगदान का ऐतिहासिक अध्ययन

उन्नीसवीं शताब्दी का भारतीय समाज गहन सामाजिक असमानताओं और लैंगिक भेदभाव से ग्रस्त था। महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने के अवसर अत्यंत सीमित थे तथा अधिकांश परिवारों में स्त्री शिक्षा को अनावश्यक माना जाता था। बाल.विवाह, विधवा.जीवन की कठोरता और सामाजिक रूढ़ियों ने महिलाओं के बौद्धिक विकास को अवरुद्ध कर रखा था। ऐसे समय में पंडिता रमाबाई ने महिला शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का आधार बनाते हुए एक नए युग का सूत्रपात किया। उनका मानना था कि जब तक महिलाओं को शिक्षा प्राप्त नहीं होगी। तब तक वे सामाजिक, आर्थिक और मानसिक रूप से स्वतंत्र नहीं हो सकेंगी (फोर्ब्स, 1996)।

पंडिता रमाबाई स्वयं एक विदुषी महिला थीं। संस्कृत पर उनकी असाधारण पकड़ और धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन ने उन्हें भारतीय समाज में महिलाओं की वास्तविक स्थिति का गहन बोध कराया। उन्होंने अनुभव किया कि महिलाओं की दुर्दशा का प्रमुख कारण शिक्षा का अभाव है। इसी कारण उन्होंने अपने सामाजिक सुधार कार्यक्रमों में शिक्षा को केंद्रीय स्थान दिया। उनका दृष्टिकोण केवल साक्षरता तक सीमित नहीं था। बल्कि वे ऐसी शिक्षा की पक्षधर थीं जो महिलाओं में आत्मविश्वासए तार्किकता और आत्मनिर्भरता का विकास कर सके (चक्रवर्ती, 1998)।

हंटर आयोग के समक्ष महिला शिक्षा का प्रश्न

पंडिता रमाबाई का महिला शिक्षा के क्षेत्र में पहला महत्वपूर्ण सार्वजनिक हस्तक्षेप 1882 में देखने को मिलता हैए जब उन्होंने भारतीय शिक्षा आयोग (हंटर आयोग) के समक्ष महिलाओं की शिक्षा की वास्तविक स्थिति को प्रस्तुत किया। उन्होंने आयोग को बताया कि भारतीय महिलाओं की शिक्षा के मार्ग में सामाजिक प्रतिबंध, महिला शिक्षिकाओं की कमी तथा शैक्षणिक संसाधनों का अभाव प्रमुख बाधाएँ हैं। उन्होंने महिला शिक्षिकाओं तथा महिला चिकित्सकों की नियुक्ति की आवश्यकता पर विशेष बल दिया। उनके सुझावों ने महिला शिक्षा के प्रश्न को राष्ट्रीय बहस का विषय बना दिया और शिक्षा सुधार की दिशा में नई सोच को जन्म दिया (फोर्ब्स, 1996)।

हंटर आयोग के समक्ष प्रस्तुत उनके विचार यह दर्शाते हैं कि वे शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय और महिला अधिकारों की प्राप्ति का साधन मानती थीं। इस प्रकार उनके विचार आधुनिक महिला शिक्षा नीतियों के प्रारम्भिक वैचारिक आधार के रूप में देखे जा सकते हैं।

शारदा सदन – महिला शिक्षा का संस्थागत स्वरूप

महिला शिक्षा के क्षेत्र में पंडिता रमाबाई का सबसे महत्वपूर्ण योगदान शारदा सदन की स्थापना थी। वर्ष 1889 में स्थापित यह संस्था विशेष रूप से बाल.विधवाओं और परित्यक्त महिलाओं को शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से बनाई गई थी। उस समय समाज में विधवाओं को शिक्षा प्राप्त करने की अनुमति नहीं थी और उन्हें सामाजिक बहिष्कार का सामना करना पड़ता था। शारदा सदन ने ऐसे वातावरण में महिलाओं को सुरक्षित आश्रय, शिक्षा और प्रशिक्षण उपलब्ध कराया (;रमाबाई, 1887–2000)।

शारदा सदन की विशेषता यह थी कि यहाँ केवल पारंपरिक विषयों की शिक्षा नहीं दी जाती थीए बल्कि महिलाओं को व्यावसायिक प्रशिक्षण भी प्रदान किया जाता था। इससे वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 06, June 2026

लगीं। यह पहल अपने समय से बहुत आगे की सोच का प्रतिनिधित्व करती थी। क्योंकि इससे महिला शिक्षा को सीधे रोजगार और आत्मनिर्भरता से जोड़ा गया। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शारदा सदन ने महिला शिक्षा को सामाजिक पुनर्वास और सशक्तिकरण के साथ जोड़ने का सफल प्रयास किया।

मुक्ति मिशन और महिला सशक्तिकरण

शारदा सदन के अतिरिक्त पंडिता रमाबाई द्वारा स्थापित मुक्ति मिशन महिला शिक्षा और पुनर्वास के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण संस्था थी। केडगांव (पुणे) में स्थापित इस मिशन ने अनाथ, विधवा, परित्यक्ता और वंचित महिलाओं को शिक्षा एवं कौशल विकास के अवसर प्रदान किए। यहाँ महिलाओं को औपचारिक शिक्षा के साथ.साथ हस्तशिल्प, कृषि, सिलाई तथा अन्य व्यावसायिक कार्यों का प्रशिक्षण दिया जाता था। (कोसांबी, 2000)।

मुक्ति मिशन के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि पंडिता रमाबाई शिक्षा को व्यापक सामाजिक परिवर्तन का माध्यम मानती थीं। उनका उद्देश्य महिलाओं को केवल शिक्षित बनाना नहीं थाए बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर और सम्मानजनक जीवन जीने योग्य बनाना था। इस संस्था ने हजारों महिलाओं को नया जीवन प्रदान किया तथा उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

पंडिता रमाबाई का शैक्षिक दर्शन

पंडिता रमाबाई का शैक्षिक दर्शन अपने समय के अन्य सुधारकों से भिन्न और अधिक व्यापक था। वे शिक्षा को महिलाओं की स्वतंत्रता, समानता और आत्मसम्मान से जोड़कर देखती थीं। उनका विश्वास था कि शिक्षा महिलाओं को सामाजिक रूढ़ियों और पितृसत्तात्मक नियंत्रण से मुक्त करने का सबसे प्रभावी साधन है। उन्होंने महिलाओं के लिए ऐसी शिक्षा की वकालत की जो उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास कर सके (चक्रवर्ती, 1998)।

उनकी पुस्तक उच्चवर्णीय हिन्दू महिला में यह स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि उन्होंने महिलाओं की समस्याओं का मूल कारण अशिक्षा को माना। उन्होंने तर्क दिया कि शिक्षा के माध्यम से महिलाएँ अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होंगी और सामाजिक अन्याय का विरोध करने में सक्षम बनेंगी (रमाबाई, 1887–2000)। यह दृष्टिकोण आधुनिक महिला सशक्तिकरण की अवधारणा से पूर्णतः मेल खाता है।

महिला सशक्तिकरण पर पंडिता रमाबाई के प्रयासों का प्रभाव

पंडिता रमाबाई के शैक्षिक प्रयासों का प्रभाव केवल उनके जीवनकाल तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसका प्रभाव आगे चलकर भारतीय महिला आंदोलन पर भी पड़ा। उनके द्वारा स्थापित संस्थाओं ने महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने और आत्मनिर्भर बनने के अवसर प्रदान किए। इससे समाज में महिला शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हुआ तथा महिलाओं की सार्वजनिक जीवन में भागीदारी बढ़ी (कुमार, 1997)।

उनके कार्यों ने यह सिद्ध किया कि शिक्षा महिलाओं के आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक विकास की आधारशिला है। आधुनिक भारत में महिला साक्षरता, उच्च शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में जो प्रगति दिखाई देती हैए उसके प्रारम्भिक वैचारिक स्रोतों में पंडिता रमाबाई का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 06, June 2026

महिलाओं को केवल परिवार तक सीमित भूमिका से बाहर निकालकर समाज निर्माण की सक्रिय भागीदार के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया।

विवेचना

प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत उपलब्ध साहित्य, ऐतिहासिक दस्तावेजों तथा पंडिता रमाबाई के लेखन के विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में महिला शिक्षा के क्षेत्र में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और दूरगामी प्रभाव वाला था। उस समय भारतीय समाज में महिलाओं की शिक्षा को सामाजिक मान्यता प्राप्त नहीं थी तथा बाल.विवाह, विधवा.जीवन और लैंगिक असमानता जैसी समस्याएँ महिलाओं के विकास में प्रमुख बाधाएँ थीं। ऐसे सामाजिक परिवेश में पंडिता रमाबाई ने महिला शिक्षा को सामाजिक सुधार और महिला सशक्तिकरण का आधार बनाकर एक नई दिशा प्रदान की।

अध्ययन से ज्ञात हुआ कि पंडिता रमाबाई ने महिला शिक्षा को केवल साक्षरता प्राप्त करने का साधन नहीं मानाए बल्कि इसे महिलाओं की स्वतंत्रता, आत्मसम्मान और सामाजिक भागीदारी से जोड़ा। उन्होंने यह प्रतिपादित किया कि शिक्षा महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बनाती है तथा उन्हें आत्मनिर्भर जीवन जीने में सक्षम बनाती है। उनके विचारों में शिक्षा का उद्देश्य महिलाओं के व्यक्तित्व का समग्र विकास करना था, जो उस समय की परंपरागत सोच से भिन्न और प्रगतिशील दृष्टिकोण को दर्शाता है।

शोध के दौरान यह तथ्य भी सामने आया कि हंटर आयोग (1882) के समक्ष प्रस्तुत उनके विचार महिला शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण हस्तक्षेप थे। उन्होंने महिला शिक्षिकाओं और महिला चिकित्सकों की आवश्यकता पर बल देते हुए महिलाओं के लिए अनुकूल शैक्षिक वातावरण की वकालत की। इससे यह स्पष्ट होता है कि वे केवल सिद्धांतों तक सीमित नहीं थीं, बल्कि महिला शिक्षा के व्यावहारिक पक्षों को भी समझती थीं।

अध्ययन में यह भी पाया गया कि शारदा सदन और मुक्ति मिशन जैसी संस्थाओं की स्थापना उनके शैक्षिक दृष्टिकोण का मूर्त रूप थी। इन संस्थाओं ने विशेष रूप से विधवाओं, अनाथों तथा परित्यक्त महिलाओं को शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान किया। इससे महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने तथा समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त करने का अवसर मिला। इन संस्थानों ने महिला शिक्षा को सामाजिक पुनर्वास और आर्थिक सशक्तिकरण से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

चर्चा के दौरान यह स्पष्ट हुआ कि पंडिता रमाबाई के प्रयासों का प्रभाव केवल उनके जीवनकाल तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उन्होंने भारतीय महिला आंदोलन और आधुनिक महिला शिक्षा की दिशा को भी प्रभावित किया। उनके विचारों ने महिलाओं के अधिकार, समानता और सामाजिक न्याय के प्रश्नों को प्रमुखता प्रदान की। वर्तमान समय में महिला शिक्षा और महिला सशक्तिकरण संबंधी नीतियों में भी उनके विचारों की प्रासंगिकता दिखाई देती है।

अंततः अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि पंडिता रमाबाई आधुनिक भारत में महिला शिक्षा आंदोलन की अग्रणी व्यक्तित्व थीं। उन्होंने शिक्षा को महिला मुक्ति और सामाजिक परिवर्तन का प्रभावी साधन बनाकर महिलाओं के लिए नए अवसरों का सृजन किया। उनके द्वारा स्थापित संस्थाएँ, उनके शैक्षिक विचार तथा सामाजिक सुधार संबंधी प्रयास आज भी महिला शिक्षा और सशक्तिकरण के क्षेत्र में प्रेरणास्रोत बने हुए हैं।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 06, June 2026

इसलिए भारतीय महिला शिक्षा के इतिहास में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण, ऐतिहासिक तथा स्थायी महत्व का माना जाना चाहिए।

निष्कर्ष–

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि पंडिता रमाबाई सरस्वती आधुनिक भारत में महिला शिक्षा आंदोलन की प्रमुख अग्रदूतों में से एक थीं। उन्होंने ऐसे समय में महिला शिक्षा के महत्व को स्थापित कियाए जब भारतीय समाज में महिलाओं को शिक्षा से वंचित रखा जाता था तथा सामाजिक रूढ़ियाँ उनके विकास में बाधक थीं। पंडिता रमाबाई ने यह समझा कि महिलाओं की वास्तविक उन्नति और सशक्तिकरण का आधार शिक्षा है। इसी विचार को केंद्र में रखते हुए उन्होंने महिला शिक्षा के प्रसार के लिए निरंतर प्रयास किए।

अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि हंटर आयोग के समक्ष प्रस्तुत उनके विचारों ने महिला शिक्षा के प्रश्न को राष्ट्रीय स्तर पर प्रमुखता प्रदान की। इसके अतिरिक्त, शारदा सदन और मुक्ति मिशन जैसी संस्थाओं की स्थापना के माध्यम से उन्होंने महिला शिक्षा को व्यवहारिक स्वरूप प्रदान किया। इन संस्थाओं ने विशेष रूप से विधवाओं, अनाथों तथा सामाजिक रूप से उपेक्षित महिलाओं को शिक्षा, प्रशिक्षण और आत्मनिर्भरता के अवसर उपलब्ध कराए। इससे महिलाओं के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आया तथा उनमें आत्मविश्वास और सामाजिक चेतना का विकास हुआ।

पंडिता रमाबाई का योगदान केवल शैक्षणिक संस्थाओं की स्थापना तक सीमित नहीं थाए बल्कि उन्होंने महिलाओं के अधिकारों, समानता और आत्मसम्मान की भावना को भी प्रोत्साहित किया। उनके विचारों और कार्यों ने भारतीय महिला आंदोलन को नई दिशा प्रदान की तथा महिला सशक्तिकरण की मजबूत नींव रखी।

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पंडिता रमाबाई का महिला शिक्षा के क्षेत्र में योगदान भारतीय सामाजिक इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। उनके प्रयासों ने न केवल महिलाओं के लिए शिक्षा के नए द्वार खोले, बल्कि उन्हें स्वतंत्र, जागरूक और आत्मनिर्भर नागरिक के रूप में स्थापित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वर्तमान समय में भी उनके विचार और कार्य महिला शिक्षा तथा लैंगिक समानता के क्षेत्र में अत्यंत प्रासंगिक और प्रेरणादायक बने हुए हैं।

संदर्भ सूची–

- चक्रवर्ती, उमा. (1998). पंडिता रमाबाई : जीवन और समय का पुनर्लेखन। नई दिल्ली: जुबान प्रकाशन।
- चक्रवर्ती, उमा. (1998). Rewriting History: The Life and Times of Pandita Ramabai. नई दिल्ली: Kali for Women.
- कुमार, राधा. (1997). भारतीय महिला आंदोलन का इतिहास। नई दिल्ली: जुबान प्रकाशन।
- कुमार, राधा. (1997). The History of Doing: An Illustrated Account of Movements for Women's Rights and Feminism in India, 1800–1990. नई दिल्ली: Zubaan.
- कोसांबी, मीरा. (1988). महिला मुक्ति और समानता : पंडिता रमाबाई का योगदान। इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, विशेषांक।
- कोसांबी, मीरा. (1998). "Multiple Contestations: Pandita Ramabai's Educational and Missionary Activities in Late Nineteenth-Century India and Abroad." Women's History Review, 7(2).
- कोसांबी, मीरा. (2000). पंडिता रमाबाई : जीवन और महत्वपूर्ण लेखन। नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- कोसांबी, मीरा. (2000). Pandita Ramabai: Life and Landmark Writings. लंदन: Routledge.

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 06, June 2026

- कोसांबी, मीरा (सम्पा.). (2000). पंडिता रमाबाई के अपने शब्दों में : चयनित रचनाएँ। नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- कोसांबी, मीरा (सम्पा.). (2000). Pandita Ramabai Through Her Own Words: Selected Works. नई दिल्ली: Oxford University Press.
- फोर्ब्स, जेराल्डीन. (1996). आधुनिक भारत में महिलाएँ। कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
- फोर्ब्स, जेराल्डीन. (2005). औपनिवेशिक भारत में महिलाएँ : राजनीति, चिकित्सा और इतिहासलेखन पर निबंध। नई दिल्ली: क्रॉनिकल बुक्स।
- फोर्ब्स, जेराल्डीन. (1996). Women in Modern India. Cambridge: Cambridge University Press.
- मैकनिकोल, निकोल. (1926). Pandita Ramabai. Association Press.
- रमाबाई, पंडिता. (1887). The High-Caste Hindu Woman. Philadelphia.
- रमाबाई, पंडिता. (1889). संयुक्त राज्य अमेरिका के लोग (अमेरिकी अनुभव पर आधारित यात्रा-वृत्तांत)। पुनर्मुद्रित संस्करण।
- रमाबाई, पंडिता. (1887/2000). उच्चवर्णीय हिन्दू महिला। नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- शाह, ए. बी. (सम्पा.) एवं सिस्टर जेराल्डिन (सम्पा.). (1977). पंडिता रमाबाई के पत्र एवं पत्राचार। मुंबई: महाराष्ट्र राज्य साहित्य एवं संस्कृति मंडल।